रात्रि क्लास 6/11/68 ओमशांति शिवबाबा याद है?

" गोप-गोपियों की लोड ही लख लहे, " बच्चों को खुशी इतनी होनी चाहिए। बेहद का बाप पढ़ाते हैं। और बच्चे समझते हैं बहुत बार शरीर छोड़कर आत्मा ने नया-2 शरीर लिया है। ऐसे करते-2 शरीर ही पुराना हो गया है। तमोप्रधान और सतोप्रधान होते ही रहते हैं। तमोप्रधान को सतोप्रधान बनाने लिए ही यह संगमयुग है। अभी कहेंगे कनिष्ठ। बच्चों को अभी समझ आई है बाप को याद करने से हमारी आत्मा सतोप्रधान बन जावेगी। यह तो पुरुषार्थ करना ही है। गीता के अक्षर भी है मन्मनाभव। अलफ माना बाबा। बे बादशाही। तो अभी यह याद करना है। स्वर्ग में तो जाते हो ना। स्वर्गवासी तो बनते हो ना। कोई मरता है तो कहते हैं स्वर्गवासी हुआ। स्वर्ग कहा जाता है नई दुनिया को। स्वर्ग को सभी इतना याद करते हैं जो कोई मरता है तो कहते हैं स्वर्ग पधारा। गोया पहले नर्क में था सो स्वर्ग में गया। तो सिद्ध होता है ना नर्क में है। तुम बच्चों के लिए सर्विस बहुत है। अखबार में पड़ता है तो समझाना पड़े। बिगर कोई मेहनत स्वर्गवासी थोड़े ही होंगे। आगे समझते नहीं थे। अब समझते आये हो। तुम जानते हो हम बरोबर स्वर्गवासी बनते हैं। माया घड़ी-2 भुला देती है। फिर याद करना पड़े। बाबा को तीनों रूप में याद करने से खुशी का पारा चढ़ा रहना चाहिए। बाबा आया हुआ है। ज़रूर लेकर ही जावेंगे। पुरानी दुनिया को खलास होना ही है। शास्त्रों में सभी है अज्ञान। भक्ति से मनुष्यों को कितना धोखा मिलता है। शास्त्रों के आधार पर कितना ठहरे हुये होते हैं। अभी तुम समझते हो हम भक्ति करते थे तो गिरते थे। बाप मिला है तो चढ़ने का मार्ग मिला है। नई दुनिया को सतयुग कहा जाता है। अभी तो आयरन एज्ड, तमोप्रधान कहा जाता है। पुरानी दुनिया के बाद फिर नई दुनिया आवेगी। अभी बुद्धि से पुरानी दुनिया का सन्यास किया जाता है। पुराना घर खलास होना है, उनसे क्या दिल लगाना है। अभी बच्चों को खुशी भी होनी चाहिए भगवान हमको पढ़ाते हैं। कॉनफ्रेंस जो हुई थी कलकत्ते में, बाबा ने कहा था लेख लिखकर आओ विश्व में शांति पर; परंतु कोई ने लिखा नहीं। तुम खुद विश्व में शांति स्थापन कर रहे हो। वहाँ जाये पूछ सकते हैं शांति कैसी चाहिए। नई दुनिया में ज़रूर विश्व में शांति होगी। वह नई दुनिया गॉड फादर ही स्थापन करते हैं। अशांति की दुनिया रावण बनाती है। नई दुनिया के कैरेक्टर्स और पुरानी दुनिया के कैरेक्टर्स में कितना फर्क है! इतनी सहज बात भी कहाँ समझा नहीं सकते। बाबा जानते हैं देरी है। तो वह जौहर भरता ही नहीं। नई दुनिया सतयुग में देवताओं का राज्य था। अभी तो रावण सम्प्रदाय। विकारी सम्प्रदाय है ना। बाप समझाते हैं मुझे याद करो तो तुम तमोप्रधान से सतोप्रधान बन जावेंगे। प्युरिटी बिगर कोई शांतिधाम जा नहीं सकते। बाबा ही कल्प-2 आकर रास्ता बताते हैं। बाप आते भी हैं संगम पर। किसको भी समझाना बहुत सहज है। तुम नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार सर्विस बिल्कुल ठीक कर रहे हो। नम्बरवार फर्स्ट क्लास, सेकण्ड-थर्ड क्लास तो हैं ही। पढ़ाने वाली ब्राह्मणी भी फर्स्ट, सेकण्ड, थर्ड हैं। तो पढ़ने वाले भी ऐसे नम्बरवार हैं। सतयुग को स्वर्ग कहा जाता है। अभी बाप कहते हैं मुझे याद करो तो तुम मालिक बन जावेंगे। कितना सहज है! फिर भी घड़ी-2 क्यों मूँझ पड़ते हो। हराते हैं। माया भी कम थोड़े ही है। समझाना भी तुम बच्चों को है। बाप नहीं जावेंगे। बाप बच्चों को ही पढ़ाते हैं, बाकी को बच्चों द्वारा समझना है। न समझना है तो चले जाओ। बात ही सीधी। समझा जाता है फर्स्ट क्लास अच्छी सर्विस करते हैं। स्टूडेंट को समझना चाहिए। सभी टीचर्स एक जैसे थोड़े ही होंगे। नम्बरवार ज़रूर होंगे। बाप कोई तकलीफ की बात नहीं कहते हैं। मूँझने की बात ही नहीं। इसको कहा जाता है सहज समझानी। योग बिगर समझ क्या सकेंगे। बाप टीचर है तो ज़रूर उनको याद करना पड़े। कितना सहज है! जास्ती क्या समझाना है; परंतु नये-2 आते हैं तो समझाना पड़ता है। बाप तो कहते हैं दो अक्षर ही काफी है। मूँझते क्यों हो, समझ में ही नहीं आता है। अभी तुम बच्चों को समझ है शांतिधाम-सुखधाम को याद करना है अथवा बाप को याद करना है। सुखधाम को याद करना है। अच्छा, मीठे-2 सिकीलधे रूहानी बच्चों को रूहानी बाप दादा का यादप्यार गुडनाइट। रूहानी बच्चों को रूहानी बाप का नमस्ते।

✱✱ विश्व की बादशाही का श्रृंगार याद है? ✱✱